साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 14 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 अप्रैल 2026 से 7 अप्रैल 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

दुनिया भर में साल 2050 तक कचरे के 3.9 अरब टन तक पहुंचने के आसार-रिपोर्ट

नई दिल्ली। हर साल 30 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय शून्य अपशिष्ट दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य लोगों को कचरे की समस्या के बारे में जागरूक करना और उसे कम करने के लिए प्रेरित करना है। इस साल की थीम - हम क्या खाते हैं, कितना बर्बाद करते हैं और कैसे हम बेहतर तरीके अपना सकते हैं।

दुनिया भर में हर साल लगभग एक अरब टन खाना बर्बाद हो जाता है। यह बहुत बड़ी मात्रा है। यह लगभग कुल उपलब्ध भोजन का पांचवां हिस्सा है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इस बर्बादी का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा घरों में होता है। यानी हम खुद ही सबसे ज्यादा खाना फेंकते हैं। जब खाना बर्बाद होता है, तो उसका असर केवल पैसों तक सीमित नहीं रहता। इससे पर्यावरण को भी नुकसान होता है। जब कचरा सड़ता है, तो उससे हानिकारक गैसें निकलती हैं, जो जलवायु परिवर्तन को बढ़ाती हैं। इसके अलावा, कचरे के कारण जमीन और पानी भी प्रदूषित होते हैं। कई जगहों पर लोग कचरे को जलाते हैं। यह तरीका बहुत खतरनाक है। इससे जहरीली गैसें निकलती हैं, जो हवा को प्रदूषित करती हैं और लोगों की सेहत पर बुरा असर डालती हैं। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया में कचरे की मात्रा लगातार बढ़ रही है। साल 2022 में लगभग 2.6 अरब टन कचरा पैदा हुआ था। आने वाले समय में यह और बढ़कर 2050 तक 3.9 अरब टन तक पहुंच सकता है। हालांकि कचरे को संभालने के तरीके कुछ जगहों पर बेहतर हो रहे हैं, लेकिन यह सुधार काफी नहीं है। बड़ी मात्रा में कचरा अभी भी सही तरीके से प्रबंधित नहीं हो पाता है। इसका मतलब है कि आने वाले वर्षों में भी यह समस्या बनी रहेगी। भोजन की बर्बादी- दुनिया में हर साल लगभग 1 अरब टन खाना बर्बाद होता है, जिसमें 60 प्रतिशत घरेलू स्तर पर होता है। कम आय वाले देशों में यह समस्या और भी गंभीर है। वहां कचरा प्रबंधन के लिए पर्याप्त साधन और व्यवस्था नहीं है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, कचरे की मात्रा भी बढ़ती जाती है। लेकिन उसे संभालने के लिए जरूरी सुविधाएं नहीं बढ़ पातीं। इन देशों को अगले 25 वर्षों में बहुत बड़ी रकम निवेश करनी होगी ताकि वे अपने कचरा प्रबंधन सिस्टम को सुधार सकें। अगर ऐसा नहीं किया गया, तो समस्या और भी बढ़ सकती है। खराब कचरा प्रबंधन का असर लोगों की सेहत पर पड़ता है। गंदगी और प्रदूषण के कारण कई बीमारियां फैलती हैं। इसके अलावा, इससे आर्थिक नुकसान भी होता है। जमीन की कीमत कम हो जाती है, पर्यटन पर असर पड़ता है और प्राकृतिक संसाधनों का नुकसान होता है। इसलिए यह कहना गलत होगा कि कचरा प्रबंधन पर खर्च करना महंगा है। असल में, अगर हम अभी निवेश नहीं करते, तो हमें भविष्य में ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी।

इस समस्या का समाधान केवल सरकार के पास नहीं है। इसमें हर व्यक्ति की भूमिका है। हमें अपने घरों में खाना बर्बाद करना कम करना होगा। जितनी जरूरत हो उतना ही खाना बनाना और खरीदना चाहिए। इसके साथ ही, हमें कचरे को सही तरीके से अलग करना और उसका पुनः उपयोग करना सीखना होगा। सरकारों को भी बेहतर नीतियां बनानी होंगी और कचरा प्रबंधन में निवेश बढ़ाना होगा। कचरे की समस्या केवल पर्यावरण की समस्या नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और विकास से जुड़ी हुई है। अगर हम समय रहते कदम नहीं उठाते, तो यह समस्या और भी गंभीर हो जाएगी। इस अंतर्राष्ट्रीय शून्य अपशिष्ट पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम कचरा कम करेंगे और अपने भविष्य को सुरक्षित बनाएंगे।

बड़े पुण्य व देवताओं की कृपा से मिलता है मनुष्य का शरीर

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति में यज्ञ का महत्व सर्वश्रेष्ठ है। यज्ञ के माध्यम से देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है और जीवन धन्य हो जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति में बड़े पुण्य व देवताओं की कृपा से मनुष्य का शरीर मिलता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरूवार को छिंदवाड़ा के सिहोरा मॉल स्थित रामेश्वरम धाम में सहस्त्र चंडी महायज्ञ के समापन अवसर पर संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यज्ञ में सहभागी होकर व्यक्ति अपने जीवन में जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए क्षमा याचना करता है और यश, सुख तथा समृद्धि की कामना करता है। ऐसे आयोजनों से सनातन संस्कृति के प्रति आस्था मजबूत होती है और सात्विक भाव से जनता की सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवद्गीता के उपदेशों को जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उपस्थित जनसमुदाय को नववर्ष विक्रम संवत 2083 की शुभकामनाएं भी दीं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रहा है और निडरता के साथ कार्य कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि आज नवरात्रि के पावन पर्व पर हनुमान लोक का लोकार्पण भी हुआ है। उन्होंने कहा कि यह शरीर पंचतत्व से बना होता है जिसमें पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां होती है। इन दसों इंद्रियों से लगातार सात्विक भाव से कार्य करने पर सात्विक शक्ति उत्पन्न होती है।

जलवायु परिवर्तन से गंगा-ब्रह्मपुत्र-सिंधु में उफान की आशंका, कावेरी में अलग रुझान- रिपोर्ट

मुंबई। अध्ययन में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण के कारण बारिश में भारी बढ़ोतरी होगी जिससे भारत की प्रमुख नदियों के जल प्रवाह में वृद्धि होगी बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी। सदी के अंत तक भारत की प्रमुख नदियों में जल प्रवाह बढ़ेगा, जिसका मुख्य कारण बदलती जलवायु के कारण मानसूनी वर्षा का तीव्र होना है।

वैज्ञानिकों ने ऐतिहासिक मौसम व नदी के आंकड़ों का उपयोग कर कमजोर मॉडलों को हटाया और अधिक सटीक जलवायु अनुमान तैयार किए हैं। नई पद्धति से पूर्वानुमान की अनिश्चितता लगभग 30 से 50 प्रतिशत तक कम हुई, जिससे योजना बनाना अधिक आसान और भरोसेमंद बना है। सभी क्षेत्रों में समान प्रभाव नहीं होगा, कावेरी नदी में शुरुआत में कमी के बाद जल स्तर स्थिर होने की संभावना जताई गई है। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी। भारत के लिए नदियां जीवन का आधार हैं। खेती, पीने का पानी, बिजली और रोजमर्रा की जिंदगी इन पर निर्भर करती है। हाल ही में एक नए अध्ययन में वैज्ञानिकों ने बताया है कि इस सदी के अंत तक भारत की बड़ी नदियों में पानी की मात्रा बढ़ सकती है। यह खबर सुनने में अच्छी लगती है, लेकिन इसके कई पहलू हैं जिन्हें समझना जरूरी है। अर्थ फ्यूचर नामक पत्रिका में प्रकाशित इस शोध में वैज्ञानिकों ने भारत की नौ बड़ी नदी घाटियों का अध्ययन किया। इसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु जैसी प्रमुख नदियां शामिल हैं। उनके अनुसार, आने वाले वर्षों में इन नदियों में पानी का बहाव बढ़ेगा। इसका मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती बारिश है। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी। वैज्ञानिकों का मानना है कि जैसे-जैसे पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा, वैसे-वैसे मानसून भी तेज होगा। इससे नदियों में ज्यादा पानी आएगा। पहले भी इस तरह के अनुमान लगाए गए थे, लेकिन उनमें काफी अंतर और अनिश्चितता थी। इस बार वैज्ञानिकों ने एक खास गणितीय तकनीक का इस्तेमाल किया। उन्होंने पुराने मौसम के आंकड़े और नदियों के बहाव के आंकड़ों को लिया, जो लगभग 1850 से उपलब्ध है। इसके बाद उन्होंने कई कंप्यूटर मॉडल्स को इन वास्तविक आंकड़ों से मिलाया। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी। जो मॉडल सही तरीके से पुराने डेटा को समझ पाए, उन्हें ज्यादा महत्व दिया गया। जो मॉडल गलत साबित हुए, उन्हें कम महत्व दिया गया। इस तरीके से वैज्ञानिकों ने ज्यादा सटीक परिणाम हासिल किए। पहले के अध्ययनों में अलग-अलग मॉडल अलग-अलग परिणाम देते थे। इससे भविष्य की योजना बनाना मुश्किल हो जाता था। लेकिन इस नए अध्ययन में अनिश्चितता को काफी हद तक कम किया गया है। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी।

वैज्ञानिकों ने बताया कि उन्होंने भविष्य के अनुमानों में लगभग 30 से 50 प्रतिशत तक की अनिश्चितता कम कर दी है। इसका मतलब है कि अब हम ज्यादा भरोसे के साथ कह सकते हैं कि आगे क्या हो सकता है। हालांकि ज्यादातर नदियों में पानी बढ़ने की संभावना है, लेकिन हर क्षेत्र में स्थिति एक जैसी नहीं होगी। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत की कावेरी नदी में शुरुआत में पानी कम हो सकता है। बाद में यह स्थिति स्थिर हो सकती है। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी। इससे पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन का असर हर जगह अलग-अलग तरीके से पड़ेगा। इसलिए हर क्षेत्र के लिए अलग योजना बनानी होगी। यह अध्ययन भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। देश की बड़ी आबादी खेती पर निर्भर है, और खेती के लिए पानी जरूरी है। अगर नदियों में पानी बढ़ता है, तो इससे सिंचाई में मदद मिल सकती है। लेकिन ज्यादा पानी का मतलब बाढ़ का खतरा भी बढ़ सकता है। इसलिए सरकार को पहले से तैयारी करनी होगी। मजबूत बांध, बेहतर जल प्रबंधन और सही योजना बनाना जरूरी होगा। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी। इसके अलावा यह जानकारी बिजली उत्पादन के लिए भी उपयोगी है। जलविद्युत परियोजनाओं की योजना बेहतर तरीके से बनाई जा सकती है। इस अध्ययन से यह साफ होता है कि हमें आने वाले समय के लिए अभी से तैयारी करनी होगी। केवल यह जानना काफी नहीं है कि पानी बढ़ेगा, बल्कि यह भी समझना जरूरी है कि इसका सही उपयोग कैसे किया जाए। बढ़ते जल प्रवाह से बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, इसलिए बेहतर जल प्रबंधन, सिंचाई योजना और मजबूत बुनियादी ढांचे की जरूरत होगी।अगर सही कदम उठाए जाएं, तो यह बदलाव हमारे लिए फायदेमंद हो सकता है। लेकिन अगर तैयारी नहीं की गई, तो यह समस्या भी बन सकता है।

कुल मिलाकर, यह नया अध्ययन हमें भविष्य की एक साफ तस्वीर दिखाता है। भारत की नदियों में पानी बढ़ सकता है, लेकिन इसके साथ चुनौतियां भी आएंगी। सही योजना और समझदारी से हम इन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं और अपने देश को सुरक्षित और समृद्ध बना सकते हैं।

अरब सागर से आ रही नमी के कारण तापमान में गिरावट

इन्दौर। शहर में एक बार फिर मौसम बदलने वाला है और प्रदेश के अन्य शहरों में भी तापमान में कुछ अंतर आगामी दिनों में रह सकता है और आज से गरज चमक के साथ बूंदाबांदी के आसार हैं। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से आ रही नमी के कारण मौसम में ठंडक रहेगी। पश्चिमी विक्षोभ से भी तापमान में कमी होगी। अप्रेल की शुरूआत में भी इसी तरह से मौसम बना रहेगा। इस बीच कल दिन का तापमान पहली बार सामान्य से 1 डिग्री सेल्सियस कम 35.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ जबकि बीती रात 1 डिग्री बढ़कर 20 डिग्री सेल्सियस रहा।

मार्च महीनें में कई वर्षों बाद बारिश के कारण तापमान में कमी आई थी और गर्मी से राहत थी मगर अब फिर तापमान बढ़ने लगा है और हल्की गर्मी हो रही है। मार्च के इन दिनों में तापमान 36 डिग्री सेल्सियस के आसपास होता है कल दिन का तापमान सामान्य से 1 डिग्री सेल्सियस कम दर्ज हुआ जबकि रात में तापमान 20 डिग्री रहा। राजस्थान की ओर दो पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हैं। वहीं अरब सागर ओर बंगाल की खाड़ी से आ रही नमी के कारण शहर और आसपास के इलाकों में ठंडक है। इधर मौसम के जानकारों का कहना है कि प्रदेश के कई शहरों में एक बार फिर से मौसम ठंडा होगा और गरज चमक के साथ कई जगह बूंदाबांदी भी होगी जिससे तापमान कम होगा। मालवा निमाड़ के खरगोन, खंडवा, इन्दौर व अन्य जिलों में तापमान में अंतर रहेगा।

दूध बना देश की सबसे बड़ी 'कैश क्रॉप'

भारतीय कृषि हरित क्रांति के बाद से निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वह धीरे-धीरे, लेकिन लगातार बागवानी, पशुपालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन और कृषि-वानिकी जैसे उच्च मूल्य वाले और संभावित रूप से अधिक लाभकारी संबद्ध क्षेत्रों की ओर बढ़ रही है। फसल खेती की तुलना में इन क्षेत्रों की उच्च और तीव्र वृद्धि से यह स्पष्ट रूप से झलकता है।

इस वर्ष जारी आर्थिक समीक्षा के अनुसार, 2024-25 में समाप्त हुए पिछले दशक में फसल क्षेत्र की औसत वार्षिक वृद्धि दर मात्र लगभग 3.5 फीसदी रही, जबकि पशुधन क्षेत्र में यह 7.1 फीसदी और मत्स्य पालन में 8.8 फीसदी तक थी। ऐतिहासिक रूप से भी 1960 के दशक से तकनीकी प्रगति के बावजूद फसल उत्पादन की औसत वार्षिक वृद्धि दर केवल 2.0 से 3.5 फीसदी के बीच रही है। दूसरी ओर, कृषि क्षेत्र के उच्च मूल्य वाले खंडों के विस्तार की गति कहीं अधिक प्रभावशाली रही है जो इस दर से दोगुनी से भी ज्यादा है।

फसलों के भीतर भी अनाज और अन्य खाद्य एवं गैर-खाद्य फसलों की तुलना में बागवानी कहीं बेहतर प्रदर्शन कर रही है। बागवानी में फल, सब्जियों, फूल और जड़ी-बूटियों जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पादों की पैदावार होती है। वर्ष 2024-25 में बागवानी उत्पादों का उत्पादन, खाद्यान्न उत्पादन से काफी अधिक रहा। जहां खाद्यान्न उत्पादन का आधिकारिक अनुमान लगभग 33 करोड़ टन है, वहीं बागवानी उत्पादन 36 करोड़ टन से अधिक रहा। इसमें 11.45 करोड़ टन फल और 21.96 करोड़ टन सब्जियां शामिल थीं। इससे भारत फलों और सब्जियों का विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है, जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 13 फीसदी है। केले, पपीते, आम, अदरक और भिंडी जैसे कई प्रमुख बागवानी उत्पादों के मामले में भारत अग्रणी उत्पादक है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कृषि में सकल मूल्य वर्द्धन (जीवीए) में बागवानी उत्पादों का योगदान अब लगभग 33 फीसदी है।

पशुपालन और मत्स्य पालन का रिकॉर्ड तो और भी उल्लेखनीय है। उदाहरण के लिए, पशुधन क्षेत्र का सकल जीवीए 2014-15 और 2023-24 के बीच 195 फीसदी तक बढ़ गया है, जो मौजूदा कीमतों पर 12.77 फीसदी की चक्रवृद्धि वार्षिक दर दर्शाता है। इसी तरह, मत्स्य पालन क्षेत्र का सकल जीवीए भी इसी अवधि में 140 फीसदी तक बढ़ गया है। आर्थिक समीक्षा में इसे 'कृषि उत्पादन के धीरे-धीरे उच्च मूल्य वाली फसलों की ओर विविधीकरण' का संकेत माना गया है। इसमें स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि कृषि से जुड़े क्षेत्र तेजी से महत्त्वपूर्ण विकास इंजन और किसानों की आय बढ़ाने में प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में उभर रहे हैं।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्रों ने फसल क्षेत्र से बेहतर प्रदर्शन किया है, और वह भी सरकार द्वारा कुछ प्रमुख खाद्य फसलों को दी गई वित्तीय और विपणन सहायता के बिना। चावल और गेहूं जैसे मुख्य अनाज, सरकारी एजेंसियों द्वारा लाभकारी कीमतों पर खुली खरीद के कारण लगभग नकदी फसलों में परिवर्तित हो गए हैं, जिनकी कीमतें हर साल नियमित रूप से बढ़ाई जाती हैं। फिर भी, दूध ने मात्रा और मूल्य दोनों के मामले में चावल और गेहूं को पीछे छोड़ते हुए सबसे बड़ी खाद्य वस्तु का दर्जा हासिल कर लिया है। इसका उत्पादन, 2024-25 में 24.8 करोड़ टन होने का अनुमान है, यह चावल के उत्पादन से कहीं अधिक है जिसका ?शिखर उत्पादन 15 करोड़ टन के आसपास था, और गेहूं के उत्पादन से भी अधिक है जिसने उस साल 11.8 करोड़ टन का रिकॉर्ड बनाया था। इसके अलावा, पशुपालन अब फसल खेती को पीछे छोड़ते हुए एक तरह से अधिकांश कृषि परिवारों, विशेषकर लघु एवं सीमांत किसानों (जो भारतीय कृषि आबादी का 85 फीसदी से अधिक हैं) की आजीविका का मुख्य आधार बन गया है। फसलों से होने वाली आय मौसमी होती है, जो फसल कटाई और बिक्री के बाद प्राप्त होती है और जलवायु कारकों पर बहुत अधिक निर्भर करती है, जबकि पशुपालन और मत्स्य पालन से होने वाली आय नियमित और स्थिर होती है।

इसके अलावा, सूखे या अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण फसलें खराब होने पर भी पशुधन ग्रामीण परिवारों के लिए भोजन और आय का एक विश्वसनीय स्रोत बना रहता है। इसके अलावा फसल खेती और पशुपालन का एक अनूठा सहजीवी संबंध है, जिसमें एक के अपशिष्ट और उप-उत्पाद दूसरे के लिए इनपुट के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत में अधिकांश कृषि परिवारों के पास अपनी आय और परिवार के पोषण के पूरक के रूप में कुछ मवेशी या अन्य पशुधन जैसे मुर्गी, बकरी, भेड़ या सूअर होते हैं। हालांकि, पशुधन और मत्स्य पालन क्षेत्र भी कुछ गंभीर चुनौतियों से जूझ रहे हैं। पशुधन क्षेत्र के लिए चारे और पशु आहार की कमी और उच्च लागत सबसे बड़ी बाधा है, वहीं मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए पैदावार के बाद के प्रबंधन के वास्ते बुनियादी ढांचे का अभाव सबसे बड़ी समस्या है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुमान के अनुसार, हरे चारे की कमी लगभग 30 फीसदी और सूखे चारे की कमी 40 फीसदी है। दूध उत्पादन की लागत का लगभग 70 फीसदी हिस्सा पशु आहार और चारे पर खर्च होता है। मत्स्य पालन में, मछली पकड़ने के बाद के प्रबंधन, संरक्षण और परिवहन के लिए अनुपयुक्त और अपर्याप्त सुविधाओं के कारण उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा खराब हो जाता है। इन लाभदायक क्षेत्रों को अपनी पूरी क्षमता से फलने-फूलने में सक्षम बनाने के लिए इन मुद्दों का समग्र और तत्काल समाधान आवश्यक है।

जल ऑडिट और क्षतिपूर्ति आकलन अनिवार्य

भूजल का अत्यधिक दोहन करने वाले पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में धान की खेती के लिए भूमिगत जल पंप किया जा रहा है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) की प्रधान पीठ ने उत्तर प्रदेश में अवैध भूजल दोहन पर चिंता जाहिर करते हुए सरकार के संबंधित प्राकिरणों को भूजल दोहन के आकलन और जल ऑडिट से संबंधित कड़े निर्देश जारी किए हैं।

एनजीटी के चेयरमैन और न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की अध्यक्षता वाली पीठ ने यह आदेश महेश चंद्र सक्सेना बनाम उत्तर प्रदेश राज्य एवं अन्य और विक्रांत टोंगड़ बनाम भारत संघ एवं अन्य के मामले में दिया। इस पीठ में विशेषज्ञ सदस्य डॉ. ए. सेंथिल वेल और डॉ. अफरोज अहमद भी शामिल थे। पीठ ने भूजल दोहन के आकलन एवं पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति से संबंधित अपने पूर्व आदेशों के अनुपालन पर जोर दिया। सुनवाई के दौरान यह पाया गया कि 19 जून 2020 के आदेश विशेषकर अवैध भूजल दोहन के आकलन और जल ऑडिट से संबंधित निर्देश का पूर्ण अनुपालन नहीं हुआ है। अधिकरण ने यह भी स्पष्ट किया कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 26 मार्च 2025 के आदेश में इन निर्देशों में कोई संशोधन नहीं किया गया है, अत: यह प्रभावी हैं।अधिकरण ने दोबारा निर्देशित किया है कि भूजल दोहन का यथार्थ आकलन किया जाए। जल मीटर के अभाव में प्रतिकूल अनुमान (एडवर्स इनफरेंस) लगाया जाए यानी यदि आप जल मीटर नहीं लगाते या सही जानकारी नहीं देते, तो अधिकारी आपके पानी के बिल या खपत के लिए आपके खिलाफ अनुमान लगा सकते हैं। पीठ ने कहा कि पिछले तीन वर्षों के भूजल उपयोग और पुनर्भरण का जल ऑडिट किया जाए।अवैध दोहन के लिए पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति निर्धारित की जाए।वर्षा जल संचयन प्रणालियों की गुणवत्ता की जांच कर आवश्यक सुधारात्मक उपाय सुझाए जाएं। अधिकरण ने पूर्व में गठित संयुक्त समिति में सीपीसीबी और आईआईटी दिल्ली के अतिरिक्त प्रतिनिधियों को शामिल करने का निर्देश दिया है।

पूर्व में गठित संयुक्त समिति में राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जिला मजिस्ट्रेट गौतम बुद्ध नगर, नोएडा प्राधिकरण तथा केंद्रीय भूजल प्राधिकरण शामिल हैं।

अर्थ आवर क्या है? आप इस गर्म होती धरती में इस तरह बदलाव ला सकते हैं

हर साल मार्च के अंत में, दुनिया भर के लोग एक विशेष आयोजन के लिए एक घंटे के लिए अपने बिजली के उपकरण बंद कर देते हैं। इस आयोजन का नाम है अर्थ आवर या पृथ्वी घंटा। इस साल, 28 मार्च, शनिवार को 20वां अर्थ आवर मनाया जाएगा। यह एक ऐसा समय है जब हम अपने ग्रह के बारे में सोचते हैं और यह समझते हैं कि हमारे जीवन की सुविधा की कीमत प्रकृति को कितनी चुकानी पड़ रही है।

आज के समय में बिजली हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। हम अपने मोबाइल फोन, टीवी, फ्रिज और अन्य उपकरणों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि अगर हमें हाथ से कपड़े धोने पड़ें, आग जलाकर पानी गर्म करना पड़े या अंधेरे में सोना पड़े तो हमारा जीवन कैसा होगा? कुछ समय पहले, यह सभी चीजें सामान्य जीवन का हिस्सा थीं।

अर्थ आवर का एक उद्देश्य यह है कि हम अपनी ऊर्जा की खपत को कम करने के तरीके खोजें। रोजमर्रा की छोटी-छोटी चीजें जैसे कि पारंपरिक बल्ब की जगह ऊर्जा बचाने वाले बल्ब का इस्तेमाल करना, हमारे ग्रह के लिए बड़ा फर्क डाल सकता है। अगर लाखों लोग यह छोटे कदम उठाएं, तो इससे ऊर्जा की बचत और पर्यावरण की सुरक्षा में बड़ा योगदान होगा।

हमारे छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़े बदलाव ला सकते हैं। इसलिए पृथ्वी घंटे के दौरान सिर्फ एक घंटे के लिए बिजली बंद करना ही नहीं, बल्कि अपने रोजमर्रा के जीवन में भी ऊर्जा बचाने की आदत डालना बहुत महत्वपूर्ण है।

अर्थ आवर की ताकत समाज में एकजुटता में है। अपने मित्रों, परिवार और सहकर्मियों को भी इस आयोजन में शामिल होने के लिए प्रेरित करें। जब अधिक लोग इसमें भाग लेते हैं, तो इसका प्रभाव अधिक होता है। यह केवल एक घंटे का समय है, लेकिन यह हमें साल के बाकी 8,760 घंटे के लिए प्रेरणा देता है कि हम अपने ग्रह के प्रति जिम्मेदार बनें।

अर्थ आवर की शुरुआत ऑस्ट्रेलिया से हुई थी। 2004 में, विश्व प्रकृति कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) ने सिडनी में एक विज्ञापन एजेंसी के साथ मिलकर विचार किया कि लोग जलवायु परिवर्तन के बारे में कैसे जागरूक हो सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप 2007 में सिडनी में पहला अर्थ आवर आयोजित किया गया। इस आयोजन में शहर के लोग शाम 7-30 बजे अपने प्रकाश बंद कर दिया।

इस विचार ने जल्दी ही अन्य देशों में भी लोकप्रियता पाई। 2007 में सैन फ्रांसिस्को में लाइट्स आउट कार्यक्रम हुआ। 2008 तक, 35 देशों ने इस पहल में भाग लिया और दुनिया के सभी सात

महाद्वीपों में लोग 8 से 9 बजे तक अपनी लाइट्स बंद कर अपनी भागीदारी दिखाई।

अर्थ आवर सिर्फ एक प्रतीकात्मक कदम नहीं है, बल्कि यह हमें हमारे पर्यावरण और ऊर्जा की खपत के प्रति जागरूक करता है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हमारी छोटी-छोटी आदतें किस तरह से हमारे ग्रह पर असर डालती हैं।

इस 28 मार्च, आप भी अर्थ आवर में हिस्सा लें। बिजली बंद करें, प्रकृति के साथ समय बिताएं और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। याद रखें, एक घंटा हमारे ग्रह के लिए एक बड़ा संदेश है। छोटे प्रयासों से ही बड़े बदलाव आते हैं। अगर हम सभी मिलकर इस प्रयास में भाग लें, तो हम अपने ग्रह को सुरक्षित और सुंदर बना सकते हैं।

एनटीसीए की मंजूरी मिलते ही मध्य प्रदेश देगा सौगात

भोपाल । मध्य प्रदेश की बाघिन जल्द ही झारखंड और आंध प्रदेश राज्य में भी टाइगर्स का कुनबा बढ़ाएगी। छत्तीसगढ़, राजस्थान और ओडिशा के बाद झारखंड और आंध्र प्रदेश ने भी मध्य प्रदेश से बाघ मांगे हैं। आंध्र प्रदेश ने एक बाघिन, जबकि झारखंड ने 2 बाघिन और एक बाघ मांगा है। देश में मध्य प्रदेश में बाघों की सबसे ज्यादा संख्या है। उम्मीद लगाई जा रही है कि बाघों की गणना की अगले साल आने वाली रिपोर्ट में प्रदेश में बाघों की संख्या 1 हजार पार पहुंच सकती है।

आंध्र प्रदेश में बाघों की संख्या में पिछले सालों के मुकाबले सुधार आया है। साल 2006 में आंध्र प्रदेश में बाघों की संख्या 95 थी, जो साल 2010 में घटकर 72, 2014 में 68 और 2018 में घटकर 48 रह गई थी। इसके बाद प्रदेश में बाघों के संरक्षण को लेकर काम शुरू हुआ। इसका नतीजा 2022 में दिखाई दिया। यहां बाघों की संख्या बढक़र 63 पहुंच गई। वहीं चरण चार की निगरानी रिपोर्ट के मुताबिक 2023-24 में बाघों की संख्या बढक़र 87 हो गई है। आंध्र प्रदेश ने बाघों के कुनबे में बढ़ोत्तरी के लिए मध्य प्रदेश वन विभाग से भी मदद मांगी है। आंध्र प्रदेश ने एमपी से एक बाघिन मांगी है। इसे आंध प्रदेश के पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान के गोदावरी क्षेत्र में छोड़ा जाएगा। इस उद्यान को 1992 में स्थापित किया गया था। उधर झारखंड राज्य ने भी प्रदेश में बाघों का कुनबा बढ़ाने के लिए मध्य प्रदेश से मदद मांगी है। झारखंड ने मध्य प्रदेश से एक बाघ और दो बाघिन मांगा है। झारखंड ने इसके लिए एनटीसीए को भी प्रस्ताव सौंपा है। एनटीसीए की मंजूरी मिलने के बाद इस दिशा में आगे कदम बढ़ाया जाएगा। झारखंड के पलामू टाइगर रिजर्व में बाघों की संख्या बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। यहां अभी तीन से चार बाघ ही मौजूद हैं। झारखंड ने मध्य प्रदेश से बाघ के अलावा सांभर हिरण भी मांगे हैं। हालांकि वन विभाग वन बल प्रमुख शुभरंजन सेन के मुताबिक दोनों राज्यों ने टाइगर मांगे हैं, अभी इस पर विचार किया जा रहा है। आंध्र प्रदेश और झारखंड से पहले छत्तीसगढ़, ओडिशा और राजस्थान भी मध्य प्रदेश से बाघ मांग चुके हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008